ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 209-211**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

कोविड–19 का ग्रामीण पर्यावरण पर प्रभाव

1. बबीता टम्टा
2. प्रो0 इला साह

1. शोध अध्येत्री, 2. शोध निर्देशिका, समाजशास्त्र विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, परिसर–अल्मोडा (उत्तराखंड), भारत

Received-18.03.2025, Revised-23.03.2025 Accepted-30.03.2025 **E-mail : babitatamta07@gmail.com**

सारांशः ***प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य कोविड 19 वैश्विक महामारी का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाना है, 'स्पेनिश फ्लू' से हुई मौते के बाद सबसे अधिक मौते किसी महामारी से हुई है, तो वह है कोविड 19 इसने मनुष्य जाति को हिला कर रख दिया है। यह एक तरह से मनुष्य की लाचारी की अवस्था है क्योंकि इसका कोई कारगर इलाज अभी तक नहीं आया है। यह कहना भी मुश्किल है कि इससे निजात कब मिलेगी। जनवरी 2020 को वुहान शहर से पैदा हुई इस महामारी ने जल्दी ही पूरे विश्व को अपनी चपेट मे ले लिया, यद्यपि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे महामारी घोषित करने मे देर की। कोविड 19 का मनुष्यों पर, आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा है, अमीर, गरीब, पिछडे, विकसित सभी राष्ट्र एक ही धरातल पर खड़े हैं, लेकिन विद्वानों के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि शहरों की तुलना में ग्रामीण समाजों में इसका भयावह प्रभाव अधिक नहीं देखा गया। माना जा रहा है कि यद्यपि इसके कारण समाज के प्रत्येक व्यवस्था पर बहुत अधिक नकारात्मक प्रभाव देखे गये लेकिन कुछ मामलों में इनकी सकारात्मकता की अनदेखी नहीं की जा सकती। विशेषकर पर्यावरणीय सुरक्षा की दृष्टि से उक्त काल अत्यधिक सहयोगी व उपयोगी रहा।***

कुंजीभूत शब्द– कोविड 19, वैश्विक महामारी, पर्यावरण, वैश्विक, जंगल, वृक्ष, ध्वनि, प्रदूषण, ग्रामीण, कोरोना वायरस

प्रस्तावना – कोविड 19 स्वयं अपने आप मे एक नवीन विषय है। कोरोना वायरस महामारी (NLOD & 2019) की शुरुआत एक नये किस्म के संक्रमण के रूप मे चीन के वुहान प्रांत के0सी0 फूड एवं पौलेट्री बाजार से हुई, सर्वप्रथम इसमें पाया गया कि 2019 के मध्य दिसम्बर में बहुत से लोग निमोनिया की चपेट मे आने लगे जिसमें अधिकांश लोग सा फूट मार्केट में मछलियां बेचने वाले थे और जो जीवित पशुओं का व्यापार करते थे, धीरे–धीरे इससे लोगों में बुखार, खासी, थकान, नाक का बंद होना, गले की खराबी, सांस लेने में कठिनाई आदि अनेक संक्रमण दिखाई देने लगे और इसने विश्व के सभी देशों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में अपनी आगोश मे लेकर उन्हें बीमारी के साथ–साथ मृत्यु तक पहुँचा दिया।

भारत मे इसकी दस्तक 30 जनवरी को केरल राज्य से हुई जहाँ कोपिड का पहला मामला दर्ज किया गया और निरन्तर इसकी संख्या में वृद्धि होती गयी, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय न 28 जून 2020 तक इस वायरस से भारत मे 3,37,66,707 मामलों की पुष्टि की जिसने 4,48,339 लोगों की मृत्यु हुई।

उत्तराखण्ड मे इस वैश्विक महामारी की पुष्टि 15 मार्च 2020 को हुई और अन्य क्षेत्रों की तरह यहां भी इसका प्रकोप, तीव्रता से बढ़ता गया। अल्मोडा में 6 अप्रैल 2020 को रानीखेत में पहला मामला दर्ज हुआ। सरकार द्वारा इस महामारी से बचने के लिये लाकडाउन की प्रक्रिया को सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार मानकर लोगों को घरों में कैद रहने के लिए मजबूर कर दिया। सम्पूर्ण आर्थिक तंत्र ध्वस्त हो गया।

समस्त क्षेत्रों की जगह कुमाऊँ का ग्रामीण क्षेत्र भी इससे अधिक प्रभावित रहा। यहाँ का प्रमुख व्यवसाय कृषि व पशुपालन पर आधारित है। वर्तमान बढ़ती आवश्यकताओं के कारण ये लोग घर से बाहर जाकर छोटी–मोटी नौकरी करके परिवार का पालन–पोषण करते है लेकिन इस मलमारी के कारण लाकडाउन ने उन्हें पुनः गृह जनपद लौटने के लिए बाध्य कर दिया। वर्तमान समय में देश ही नहीं, बल्कि बाल्के पूरी दुनिया कोरोना वायरस नामक एक ऐसी महामारी के दुष्चक में फंसी है जिससे निकलने के लिये असाधारण कदमों और उपायों को जरूरत है जहां एक तरफ कोरोना वायरस (कोविड 19) की वजह से मानव जीवन अस्त–व्यस्त एवं बुरी तरह प्रभावित हुआ है। वही दूसरी तरफ यह प्रकृति (पर्यावरण) के लिये उसी वरदान से कम नहीं है, हम सिर्फ सिक्के के एक पहलू के आधार पर कोरोना वायरस को वैश्विक महामारी मान रहे है, परन्तु अगर दूसरे पहलू को देखा तो यह परिस्थितिकी तंत्र प्रकृति एवं पर्यावरण तो वरदान ही सिद्ध हो रहा है पूरी दुनिया और पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा और चिंता की खातिर बड़ी–बड़ी संगोष्ठियां और कार्य योजनाएं बनाती रही, वैश्विक चिंतन होता रहा अरबों रुपये भी खर्च हो चुके पर फिर भी कुछ खास नतीजा नहीं निकाल वही यह काम एक अपने से वायरस (कोरोना की बदौलत हुये विश्वव्यापी लॉकडाउन ने कर दिखाया) कहने का तात्पर्य है कि कोविड–19 वैश्विक महामारी ने विभिन्न नकारात्मक प्रभावों के साथ सकारात्मक प्रभावों को भी लाने का कार्य किया ऐसा पर्यावरण की स्वच्छता के आधार पर किया जा सकता है।

साहित्य पुनरावलोकन–समय समय पर विभिन्न विद्वानों ने कोविड 19 वैश्विक महामारी से उत्पन्न समस्याओं, चुनौतियों तथा उससे होने वाले सकारात्मक नकारात्मक प्रभावों को दर्शाने का प्रयाज अपनी पुस्तकों के माध्यम से किया है।

1. इला साह इला एवं जोशी ललित (2023) ने अपनी पुस्तक 'कोविड–19 प्रभाव, परिणाम एवं निदान' में शोध छात्रा मंजरी जोशी ने 'कोविड 19 के सकारात्मक–नकारात्मक प्रभाव' आलेख में आर्थिक परिवेश में कोरोना महामारी के प्रभावों का मूल्यांकन करते हुए स्पष्ट किया है कि "इससे सर्वाधिक पर्यटन प्रभावित हुआ इसके कारण गरीबी, बेरोजगारी, साइबर क्राइम के साथ मजदूरों का पलायन बढ़ा गृह जनपद लौटने के पश्चात् दहशत, घबराहट आदि अनेक ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई जिसने उन्हें पुनः कार्यक्षेत्र में न लौने के लिए बाध्य किया।"

2. सिंह एवं रस्तोगी (2023) ने अपनी पुस्तक 'कोविड 19 वैश्विक महामारी' में "कोविड 19 वैश्विक महामारी में राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय उन रिपोर्टों का संकलन किया है, जिन्होंने सामाजिक–आर्थिक व पर्यावरणीय क्षेत्रों में अपने प्रभाव डाले है। उनके अनुसार भारत सरकार द्वारा महामारी के दौरान किए गए निर्णय नवीन महामारी में चिकित्सकीय आविष्कार, ऐप्स एवं पोर्टलें का निर्माण, लॉकडाउन के प्रभावों को सीमित करने वाली योजनाओं कार्यक्रम व ऑपरेशन आदि का मूल्यांकन कर कोविड 19 के बाद बदलाव की स्थितियों को स्पष्ट कर सकारात्मक प्रभावों को दर्शाया है।"

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

3. **गुड–गो० एल० (Goadango L 2020)** के अनुसार इस कोविड–19 वैश्विक महामारी से लड़ने के लिए हमारी वैश्विकृत दुनिया के सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक ताने–बाने में प्रवासियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस परिस्थितियों में सब साथ होने का दृष्टिकोण ही स्वास्थ्य व कल्याण में मदद कर सकता है व भविष्य के संकट को कम भी।

4. मेहता 2020 – मेहता ने अपनी पुस्तक '10 इम्पैटस ऑफ कोरोना वायरस ऑन द एनवायरनमेंट, अर्थआर, 2020' में स्पष्ट किया गया है कि कोरोना वायरस संकट ने प्राकृतिक पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव डाला। दनिया भर में प्रदूषण में 40 प्रशित की कमी देखी गयी। प्रदूषण और ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में गिरावट आयी। वैश्विक स्तर पर 30 प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन में गिरावट देखने को मिली।

उद्देश्य–प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कोविड–19 वैश्विक महामारी के समय पर्यावरण में पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव को दर्शाना है।

अध्ययन क्षेत्र–प्रस्तुत शोध जनपद हवालबाग के पाखुड़ा गांव में निवासित लोगों पर आधारित है हवालबाग की कुल जनसंख्या 72613 है जिसमें 30323 पुरुष व 37290 महिलाये सम्मिलित है। यहां 10 न्याय पंचायते तथा 126 ग्राम पंचायते है, 234 गांवों के साथ ही यहां निवासित परिवारों की संख्या 15787 है। अध्ययन के लिये चयनित पाखुड़ा गांव अल्मोड़ा से 10 की दूरी पर स्थित है। जहां की जनसंख्या 561 है जो अध्ययन की समग्र होगी।

शोध प्रारचना एवं पद्धतिशास्त्र–प्रस्तुत शोध पत्र के लिये जनपद अल्मोड़ा के हवालबाग ब्लॉक के पाखुड़ा गांव के क्षेत्र के रूप में लिया गया प्रस्तुत शोध पत्र में अनवेषणात्मक तथा वर्णात्मक शोध प्रारचना का प्रयोग किया गया है निर्देशन का चयन करने के लिये पाखुड़ा गांव में निवासित 561 लोगों के 10 प्रतिशत भाग को निर्दशन की लॉटरी पद्धति के माध्यम से चुनकर इसकी पादर्शिता व वैज्ञानिकता को दर्शाने का प्रयास किया गया है। अतः अध्ययन हेतु 561 समग्र का 10 प्रतिशत भाग 56 होगा जो शोध पत्र की ईकाइयां हुयी।

प्राथमिक तथ्य के रूप में निवासित ग्रामीण लोगों से ग्रामीण क्षेत्र में कोविड–19 के पय्रवरण संबंधी प्रभावों को जानने के लिये स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची तथा द्वितीयक आंकड़ों हेतु संबंधित साहित्य शोध ग्रंथ वेबसाइट आदि को प्रयोग में लाया गया है। अतः यहाँ निवासित 56 उत्तरदाताओं से पर्यावरण प्रभावों को जानने का प्रयास किया जिसमें उत्तरदाताओं से प्रथम प्रश्न पत्र के आधार पर बात किया गया कि क्या उनके गाँव में पर्यावरण का प्रभाव पाया गया तथ्य निम्नवत पाये गये।

सर्वप्रथम यह जानने का प्रयास किया गया है कि कोविड–19 महामारी से पर्यावरण प्रभावित हुआ तथ्य निम्नवत् है।

कोविड–19 के दौरान ग्रामीण परिवेश साफ–सुथरा रहने संबंधी तथ्य

सारणी संख्या – 01

क्र०सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	41	73.21
2	नहीं	03	5.36
3	पता नहीं	12	21.43
4	योग	56	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि कोविड–19 के दौरान सर्वाधिक 73.21 प्रतिशत ग्रामीणों का मानना है कि ग्रामीण परिवेश साफ–सुथरा रहा जबकि 5.36 प्रतिशत ग्रामीण इस बात से असहमत पाये गये उनका मानना था कि जैसी स्थिति पूर्व में थी वैसी ही स्थिति कोविड–19 के समय में भी देखी गई। 21.43 प्रतिशत लोग कुछ कह सकते की स्थिति में नहीं पाये गये।

कोविड–19 ने सामाजिक व्यवस्था को तहस नहस किया ही साथ में आर्थिक, मानसिक शैक्षिक क्षेत्रों में हस्तक्षेप का प्रत्येक व्यवस्था को ध्वस्त करने का कार्य किया लेकिन जब हम अध्ययन करते है तब पता चला उक्त समय में इतने अपना सकरात्मक प्रभाव डाला है। पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य में विद्वानों द्वारा इसके सकारात्मक प्रभावों को स्पष्ट किया है इसकी प्रमाणिकता को जानने के लिये उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्य निम्नवत् है।

कोविड–19 के दौरान पर्यावरण पर प्रभाव संबंधी तथ्य

सारणी संख्या – 02

क्र०सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सकारात्मक	46	82.14
2	नकारात्मक	04	07.14
3	दोनों	06	10.72
4	योग	56	100

उपरोक्त सारणी संख्या 02 से प्राप्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि 82.14 प्रतिशत उत्तरतदाओं का मानना है कि कोविड–19 के दौरान पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला व 7.14 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से असहमत पाये गये उनका मानना था कि इस दौरान पर्यावरण पर नकारात्म प्रभाव भी देखा गया जबकि 10.72 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा दोनों प्रभावों पर अपनी सहमति जाहिर की गई। लॉकडाउन के दौरान ग्रामीण वातावरण शहरों की तुलना में अधिक स्वच्छ व निर्मल हुआ। इस विषय को जानकारी चाहने पर तथ्य निम्नवत् है।

कोविड – 19 के दौरान नदी नौले का पानी साफ रहने संबंधी तथ्य

सारणी संख्या –03

क्र०सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	36	64.29
2	नहीं	09	16.07
3	थोड़ा बहुत	11	19.64
4	योग	56	100

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

कोविड–19 के दौरान ग्रामीण क्षेत्र में हवा मिट्टी व वातावरण की शुद्धता में वृद्धि संबंधी तथ्य

सारणी संख्या – 04

क्र0सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	31	55.36
2	नहीं	07	12.50
3	थोड़ा बहुत	18	32.14
4	योग	56	100

प्राप्त तथ्यों के आधार पर सारणी संख्या 03 से स्पष्ट होता हे कि कोविड–19 के समय नदी नौले का पानी साफ पाया गया जिनका प्रतिशत 64.29 है 16.07 प्रतिशत उत्तरदाता ने इस बात को अस्वीकार किया जबकि 19.64 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने थोड़ी बहुत साफ–सफाई दिखना स्वीकार किया। अतः नदी नौले के पानी की गुणवत्ता में व्यापक रूप से सुधार हुआ है।

सारणी संख्या 04 से प्राप्त तथ्यों में सर्वाधिक 55.36 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि कोविड–19 के दौरान ग्रामीण क्षेत्र में हवा मिट्टी व वातावरण की शुद्धता में वृद्धि पाई गई। 32.14 प्रतिशत लोगों ने थोड़ा बहुत व 12.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने किसी भी प्रकार की शुद्धता में वृद्धि को स्वीकार नहीं किया है।

कोविड–19 महामारी ने पूरी दुनिया की कई तरह से प्रभावित किया। जब एक ओर लोग अपने घरों में बंद थे और स्वास्थ्य संकट से जुझ रहे थे। वहीं दूसरी ओर प्रकृति पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा। जंगलों में आग लगने की घटनाओं और पेड़ों की अवैध कटाई में कमी देखी गई। इसकी सत्यता को जानने के लिये उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्य निम्नवत् है।

कोविड–19 के दौरान जंगलों में आग लगने व वृक्षों क कटान संबंधी तथ्य

सारणी संख्या – 05

क्र0सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	47	83.93
2	नहीं	00	–
3	कह नहीं सकते	09	16.07
4	योग	56	100

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 83.93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोविड–19 के दौरान जंगलों में आग लगने व वृक्षों के कटान में कमी को स्वीकार किया है। जबकि 16.07 प्रतिशत उत्तरदाता कुछ कह सकने की स्थिति में नहीं पाये गये परंतु किसी भी उत्तरदाता ने इस बात को स्वीकार नहीं किया कि कोविड–19 के दौरान जंगलों में आग लगने व वृक्षों के कटान में वृद्धि हुई।

ध्वनि प्रदूषण मानी शोर शराबा, जो आमतौर पर वाहनों, उद्योगों, मशीनों और जनसंचार के साधनों से उत्पन्न होता है जो कोविड–19 के दौरान काफी कम हो गया जब गाड़ियां सड़कों से गायब हो गई और उद्योग बंद हो गए और मंदिरों की घंटियों को बजाने पर प्रतिबंध लग गया तब शहरों और कस्बों में शांति महसूस की गई इस विषय में जानकारी चाहने पर तथ्य निम्नवत् है।

कोविड–19 के समय ध्वनि प्रदूषण संबंधी तथ्य

सारणी संख्या – 06

क्र0सं0	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	49	87.50
2	नहीं	00	–
3	थोड़ा बहुत	09	12.5
4	योग	56	100

कोविड–19 के दौरान सर्वाधिक 87.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ध्वनि प्रदूषण में कमी को स्वीकार किया व 12.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है थोड़ा बहुत ही सुधार देखने को मिला जबकि किसी भी उत्तरदाता ने इस बात को स्वीकार नहीं किया कि कोविड–19 के दौरान ध्वनि प्रदूषण में वृद्धि देखी गई ऐसा उपरोक्त सारणी संख्या 06 से स्पष्ट होता है।

अतः उक्त आधार पर कहा जा सकता है कि यद्यपि कोविड–19 में संपूर्ण सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि सभी तंत्रों को ध्वस्त कर दिया और नकारात्मक परिणामों की देश दुनिया के सामने रखा लैटिन यदि इसका दूसरा पहलू देखा जाये तो इसके अनेक सकारात्मक पहलू भी हमें देखने को मिले जिनमें पर्यावरण शुद्धता भी एक है क्योंकि अध्ययन क्षेत्र में भी तत्कालीन व्यवस्थाओं में गाड़, गधेरे, नौले, नदियां आसमान सभी की स्वच्छता के साथ–साथ ध्वनि प्रदूषण को भी अत्यधिक कम मात्रा में देखा गया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. Hindustan.https/www.livehindustan.com/uttarakand/story-first case-of-corona virus-in-uttarakhnd-its-officer-tested-positive-for-covid-19-in-haldwani-3086907.html
2. https://www.woldometers.info/coronavirus/country/india/07 may 2024
3. जोशी, मंजरी, कोविड–19 के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव, कोविड प्रभाव, परिणाम एवं निदान, गोल्ज्यू पब्लिकेशन, अल्मोड़ा, 2023, पृ0 3
4. सिंह एवं रस्तोगी, कोविड–19 सभ्यता का संकट और समाधान, प्रभात पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2023
5. गुडेनको, माइग्रेंटस एण्ड द कोविड–19 पैनडमिक : एन इनीशिअल एनालिसिस, इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ माइग्रेशन जिनेवा, माइग्रेशन रिसर्च सीरीज नंबर 60, 2020, पृ0 2–28
6. मेहता रा, 10 इम्पैटस ऑफ कोरोनावायरस ऑन द एनवायरमेंट, अर्थआर, 2020 .

*****